शिवराजविजयम् मे स्त्री - सुरक्षा एवं सम्मान

लक्ष्मी भास्कर

शोधार्थी

संस्कृत विभाग

मिरांडा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली - 110007

शोधपत्र का सारांश (abstract)

भूमिका -

वैदिक काल से ही भारतीय संस्कृति में नारी को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया गया है , उसे केवल पारिवारिक संरचना का अंग नहीं, बल्कि धर्म, ज्ञान और समाज की सह- निर्मात्री के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। **" यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः "** सूक्ति भारतीय समाज में स्त्री के पूजनीय और गरिमामय दृष्टिकोण को दर्शाती है। नारी महान शक्ति का रूप है , वह सृजन, करुणा, धैर्य और त्याग की प्रतिमूर्ति है।

इसके उदाहरण अंबिकादत्त व्यास विरचित "**शिवराजविजयम्** " में स्पष्ट रूप से वर्णित है। यह उपन्यास केवल छत्रपति शिवाजी के आख्यान ही नहीं बल्कि, जिजाबाई , सौवर्णी और रोशनआरा जैसे पात्रों के माध्यम से उस युग के समाज में स्त्रियों के प्रति अन्याय और अत्याचार कृत्यों पर भी प्रकाश डालता है।

इस शोध पत्र में दो बिंदुओं पर मुख्य ध्यान दिया गया है-

१- मुग़ल कालीन समाज में स्त्रियों की दशा और उनकी स्थिति तथा

२- मराठा राज्य में स्त्रियों की स्थिति और स्त्रियों की सुरक्षा के लिए शिवाजी द्वारा किए गए प्रयत्न।

विषय प्रतिपादन

१. मध्यकालीन भारत में स्त्रियों की स्थिति अत्यंत दयनीय और असुरक्षित हो गई थी। भारत में मुगल आक्रमणों के कारण सामाजिक स्थिति बिगड़ने लगी थी ।

२. स्त्रियों की असुरक्षा, अपमान, अपहरण, सती प्रथा, शिक्षा का अभाव, आदि समस्याओं में बढ़ाव देखने को मिले ।

३. इस विषय पर एतिहासिक अध्ययन हो चुके है परंतु शिवराजविजयम् ग्रन्थ को आधार बना कर स्त्री सुरक्षा और सम्मान जैसे विषय पर कम ही अध्ययन हुआ है और जो हुआ है वह स्वतंत्र रूप से नहीं हुआ ।

४. इस शोध में मुग़ल काल में स्त्रियों की स्थिति कैसी थी तथा छत्रपति शिवाजी द्वारा स्त्री सुरक्षा और सम्मान जैसी समस्याओं के समाधान के लिए क्या उपाय या नीतियाँ बनाई गई ।

शोध के उद्देश्य

१. मुग़ल कालीन समाज में स्त्रियों की स्थिति का अध्ययन करना ।

२. शिवराजविजयम् उपन्यास में स्त्री पात्रों और प्रसंगों का गहन अध्ययन करना ।

३. शिवाजी द्वारा स्त्री सुरक्षा के लिए किए प्रयासों पर प्रकाश डालना।

४. स्त्री - सुरक्षा और सम्मान जैसे विषय की वर्तमान प्रासंगिकता

शोध पद्धति

इस शोध में मुख्यतः **विश्लेषणात्मक और ऐतिहासिक पद्धति** का प्रयोग किया गया है साथ ही शिवराजविजयम् ग्रन्थ का गहन अध्ययन करके औरंगजेब और शिवाजी के राज्य में स्त्रियों की स्थिति का **तुलनात्मक विश्लेषण** भी किया गया है।

शोध के अपेक्षित परिणाम

१. यह स्पष्ट होगा कि वैदिक काल से मध्यकाल तक समय के साथ समाज में नारी स्थिति में गिरावट आई है।

२. शिवराजविजयम् काव्य मध्य काल में स्त्री की स्थिति का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है।

३. यह स्पष्ट करना कि छत्रपति शिवाजी के शासन काल में स्त्री सम्मान और सुरक्षा को महत्व दिया जाता था।

४. यह प्रदर्शित करना कि एक ही समय काल में भिन्न धर्म और जातियों द्वारा समाज में स्त्री के योगदान को भिन्न- भिन्न दृष्टि से देखा गया ।

प्रमुख शब्दावली - नारी, स्त्री - सुरक्षा, स्त्री - सम्मान, मध्यकालीन समाज, शिवराजविजयम् , छत्रपति शिवाजी, राष्ट्रधर्म, सांस्कृतिक चेतना।

शिवराजविजयम् मे स्त्री - सुरक्षा एवं सम्मान

स्त्री, महिला, नारी , यह सभी शब्द एक ही भाव सत्ता के विभिन्न रूपों को व्यक्त करते हैं ,जो समाज की मर्यादा,परिवार की रीढ़, शिशु की प्रथम शिक्षिका, ममता, संवेदना और पुरुष की अर्धांगिनी मानी जाती है। स्त्री को **महिला (मह+ इहच्+ आ)** कहा जाता है, जहाँ 'मह' का अर्थ श्रेष्ठ से महिला को श्रेष्ठ और पूजनीय माना गया है। स्त्री को निरुक्त में **"मेना"** कहा गया है। ऋग्वेद में इसे **"ग्रा"** नाम से पुकारा गया है **" ग्रा गच्छन्ति एनाः**" अर्थात् जिसके पास जाकर पुरुष सम्मानपूर्ण व्यवहार करते हैं।

महर्षि पतंजलि ने कहा है **,"स्त्यास्यति अस्याँ गर्भ इति स्त्री"** अर्थात् जिसके भीतर गर्भ की स्थिति है वह स्त्री होती है।

नारी शब्द की व्युत्पत्ति **'नृ'** धातु से हुई है जिसका अर्थ- है जो गति करे या हलचल करे ,वह नर या नारी कहा जाता है।

वैदिक युग में स्त्रियों को केवल पुरुषों के बराबर ही नहीं अपितु उनसे उच्च स्थान दिया गया है। स्त्री को कहीं माता, देवी, तो कहीं सौभाग्य शालिनी, अर्धांगिनी या शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। यहाँ हमारे आदर्श भी स्त्री के रूप में मिलते है जैसे विद्या को सरस्वती , धन को लक्ष्मी , सौंदर्य को रति और पवित्रता को गंगा के रूप मे देखा गया है। अथर्ववेद में स्त्री को सरस्वती कहा गया है **- "प्रतिष्ठा विरडसि, विष्णुरिवेह सरस्वती। सिनीवाली प्र जायतां, भगस्य सुमतावसत्।।" [1]मनुस्मृति में भी " यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवताः"** कह कर स्त्री का सम्मान किया गया है। ऐसे कई उदाहरण वैदिक ग्रंथों में मिलते है जहां स्त्री का भूत , भविष्य और वर्तमान सभी सम्मानपूर्ण थे और उसकी प्रतिष्ठा उसके गुणों से जानी जाती थी।

वैदिक काल से उतर वैदिक काल आते- आते स्त्री की स्थिति उतनी अच्छी नहीं रह गई उनकी स्वतंत्रता, शिक्षा पर प्रभाव दिखने लगे। उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा का स्तर बिगड़ने लगा। स्त्रियों को दान का पात्र बनाया जाने लगा। पिता अपनी पुत्रियों को दान में देते थे। कहा जाए तो स्त्री की सुरक्षा और स्वतंत्रता पुरुषों के हाथों में जाने लगी थी परंतु फ़िर भी उनका जीवन केवल चार दीवारी के भीतर नहीं था उनको भी अधिकार और स्वतंत्रता प्राप्त थी जैसे अपना वर चुनने की स्वतंत्रता, शिक्षा , सामाजिक कार्यों में योगदान आदि। वैदिकोत्तर काल से मुग़ल काल तक यह स्थिति और भी खराब होती चली गई। स्त्रियों का बाहर जाना भी पाप समझा जाने लगा। उनका जीवन मात्र पति की सेवा और बच्चों का पालन - पोषण करने तक सीमित होता चला गया , शिक्षा, सामाजिक कार्यों में उपस्थिति इन सब से उनकी दूरी बनती चली गई।

"शिवराजविजयम्" उपन्यास में इसके अनगिनत उदाहरण देखने को मिलते है। पंडित अंबिकादत्त व्यास द्वारा रचित यह काव्य शिवाजी के ग्यारह वर्षों के जीवन पर आधारित संस्कृत उपन्यास है, जहाँ मध्यकाल में भारत की राजनैतिक परिस्थितियों को दर्शाया गया है। बारह निश्वासों और चार विरामों में विभाजित इस ग्रंथ में कवि ने केवल राजनीतिक पक्षों पर ही नहीं , अपितु उस समय में भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक स्थिति का भी चित्रण प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। इस ग्रंथ में मुगलों के एक के बाद एक आक्रमणों से सम्पूर्ण भारतवर्ष पर होने वाले प्रभाव, भारतीय संस्कृति की खिन्न - भिन्नता, मंदिरों को लूटना, वेदों को जलाना बच्चों - स्त्रियों का अपहरण करना , स्त्रियों को स्वेच्छा के बिना सती बनाना जैसे सामाजिक विषमताओं पर प्रकाश डाला है।

शिवाजी के समय में देशकाल की सत्ता मुगलों के हाथ में आ गई थी और औरंगजेब भारत की राजधानी दिल्ली सहित उत्तर भारत का बादशाह था। मुहम्मद गजनी से औरंगज़ेब तक कई यवन बादशाह भारत पर राज कर चुके थे। भारतीय संस्कृति का जड़ से विनाश करना और इस्लाम को स्थापित करने के इनके मुख्य प्रयास था। सत्रहवीं शताब्दी तक कई कुप्रथाओं ने अपनी जड़े बना ली थीं जैसे ,पर्दा प्रथा, सती प्रथा , बाल विवाह आदि। भारत की सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति संकट में थी परंतु मुगलों का दक्षिण भारत पर आक्रमण सफल नहीं हो सका , वहाँ अभी भी मराठा और अन्य दक्षिणी छोटे राजाओं का अस्तित्व था।

ऐसी विषम परिस्थितियों में स्त्रियों की स्थिति विशेष रूप से दयनीय हो गई थी। स्त्री-सम्मान और सुरक्षा पर निरंतर आघात हो रहे थे। स्त्री अपहरण जैसी घटनाएं सामान्य हो गई थीं।

स्त्री अपहरण -

शिवराजविजयम् का आरंभ ही एक सप्त वर्षीय बालिका का अपहण से होता है। सवर्णी नामक एक सप्त वर्षीय बालिका के अपहरण से होता है।

" यां च सप्तवर्षकल्पाम् , यवनवासेन निः शब्दं रुदतीम्, परम् - सुन्दरीम्, कलित - मानव - देहामिव सरस्वतीम्..."[2]

अर्थात् सवर्णी को एक यवन युवक उठाकर ले जाता है जो, केलव सप्त वर्षीय बालिका है। ऐसे दुष्कर्म मुग़ल राज्य में इस तरह के दुष्कर्म साधारण थे। बालिकाओं का अपहरण, स्त्रियों के साथ दुष्कर्म करना इस समाज में साधारण बात थी। हिंदू कन्याओं को अगवा करना , बेचना और दरबारों में नर्तकी बनाकर उनका अपमान करना , ऐसे कृत्य यवनों के लिए गर्व की बात थी। उनके लिए स्त्रियों की मर्यादा और सम्मान खेल मात्र बन कर रह गया , इसके कई उदाहरण आगे भी मिलते हैं , जहाँ योगिराज भारतवर्ष में स्त्रियों के साथ होने वाले अपमानो को ब्रह्मचारी गुरु के सामने बताते है।

"क्वचिन्मन्दिराणि भिद्यन्ते, क्वचिद् तुलसीवनानि छिद्यन्ते, क्वचिद् दारा अपह्रियन्ते, क्वचिद् धनानि लुण्ठ्यन्ते..."[3]

अर्थात् कहीं मंदिर तोड़े जा रहे हैं , कही तुलसी के वृक्ष काटे जा रहे हैं , कहीं स्त्रियों का अपहरण किया जा रहा है तो कहीं धन संपत्ति लूटी जा रही है।

सती प्रथा -

सती प्रथा जैसी कुप्रथाएं मध्यकालीन समाज में तेजी से बढ़ रही थी। इनका आरंभ तो उत्तर वैदिक काल से ही हो गया था, परन्तु मध्यकालीन समाज में इसने में अपनी गहरी जड़े बना ली थी। मुगलों के आने से पूर्व सती प्रथा साधारण नहीं थी, और स्त्रियों को सती होने की स्वेच्छा से अनुमति थी न कि बाध्य रूप से सती बनाया जाता था, परन्तु मुग़ल राज्य में इस प्रथा का दुरुपयोग किया जाने लगा , स्त्रियों को उनकी इच्छा के विरुद्ध अपमानित करते हुए जलती लपटों में जला दिया जाता था।

" सम्प्रति तु म्लछैर्गावो हन्यन्ते, वेदा विदीर्यन्ते, स्मृतयः समृद्यन्तेः मन्दिराणि मन्दुरी क्रियन्ते, सत्य पात्यन्ते, संतश्च संताप्यन्ते" [4]

अर्थात् इस समय तो यवनों द्वारा गाएं मारी जा रही हैं, वेद की पुस्तके फाड़ी जा रही हैं, स्मृतियाँ मर्दी जा रही हैं, मंदिर घुड़साल बनाए जा रहे है , सती स्त्रियां पतित बनाई जा रही है , संतों को संतप्त किया जा रहा हैं।

उस समय भारतवर्ष में यह स्थिति थी , कुछ परिस्थितियों में स्त्रियों को सामाजिक दबाव के कारण या अपनी मर्यादा को सुरक्षित रखने के लिए सती होने के लिए बाध्य किया जाता था। यवनों के द्वारा उनका अपहरण न किया जाए और

उनके साथ दुर्व्यवहार न किया जाए इस कारण भी हिंदू विधवा स्त्रियों को सती बनाया जाता था। काव्य के चतुर्थ निःश्वास में राजस्थान की स्त्रियों के जौहर करने का दुःखद प्रसंग है।

शिक्षा -

बाहरी आक्रमणों और अन्य कारणों से मध्यकाल में वैदिक काल की अपेक्षा स्त्रियों की शिक्षा के क्षेत्र में भारी गिरावट आई है। जहाँ प्राचीन काल में स्त्रियां आश्रमों में जाकर शिक्षा ग्रहण करती थीं वहीं इस समय में स्त्रियों की शिक्षा को महत्वपूर्ण नहीं समझा जाता हैं क्योंकि अगर उनका जीवन घर की चार दिवारी में ही व्यतीत होना है, तो शिक्षा की क्या आवश्यकता? समाज को ऐसे विचारों ने जकड़ लिया था। स्त्रियों से उनके अधिकार छीन लिए गए थे । शिवराजविजयम् में स्त्रियों की शिक्षा के कोई स्पष्ट उदहारण नहीं मिलते है, परन्तु सामाजिक स्थिति से अनुमान लगाया जा सकता है, जहाँ खेलती बालिका का अपहरण कर लिया जाता है वहां स्त्रियों की शिक्षा को तो निश्चय ही कोई एहमियत नहीं दी जाती होगी ।

बाल विवाह -

भारत में बाल-विवाह प्रथा का प्रचलन मुग़ल काल में बहुत तेजी से बढ़ ने लगा है। सर्वप्रथम तो बालिका का जन्म ही अशुभ माना जाता था , अगर बालिका का जन्म होताभी है तो उसका जल्द से जल्द विवाह कर दिया जाता था । यवनों की बुरी दृष्टि से हिंदू कन्याओं के माता- पिता अपनी पुत्रियों की रक्षा नहीं कर पाते थे और उनका जल्द विवाह कर दिया जाता था । शिवराजविजयम् में सवर्णी जब तक बड़ी नहीं हुई तब तक वह अलग - अलग आश्रमों में रही। उसके माता पिता का नहीं होना तथा ब्रह्मचारी गुरु और वृद्ध ब्राह्मण के लिए यवनों से सवर्णी की रक्षा करना बेहत कठिन हो जाता है। वृद्ध ब्राह्मण भी सवर्णी का बाल्यावस्था में कई बार हुए अपहरण के बारे में बताता है, इसीप्रकार के भय से उस समय में कन्याओं का विवाह जल्दी कर दिया जाता था । काव्य में भी सवर्णी का विवाह बचपन में ही तय कर दिया था , परन्तु उसके माता पिता की मृत्यु के बाद परिस्थिति बदल गई और उसका विवाह रघुवीर सिंह से होता है। विवाह के समय रघुवीर सिंह की आयु लगभग सोलह वर्ष बताई गई है और सौवर्णी भी अल्पायु में ही विवाह के बंधन में बँध जाती है ।

पितृसत्तात्मक व्यवस्था -

मनुष्य जब से प्रगति की ओर चलने लगा है उसने गुणों को महत्ता न देकर केवल शारीरिक बल को ताकत समझना प्रारंभ कर दिया है और इसी कारण जिस संस्कृति में पहले स्त्री पुरुष को बराबर हक दिया जाता था वहाँ बाद में निर्णय लेने के अधिकार और स्वतंत्रता केवल पुरुषों के पास रह गई । मुग़ल काल में तो यह स्थिति और भी खराब होती गई । स्त्रियों को एक जिम्मेदारी समझा जाने लगा , बचपन में पिता ,की विवाह के पश्चात पति की और वृद्धावस्था में पुत्र पर निर्भर हो गई । समाज पितृसत्तात्मक दृष्टि की ओर बढ़गया। स्त्रियों का जीवन पति की सेवा और उनके आदेशों का पालन करना और अपनी संतान का पालन पोषण करने में ही व्यतीत हो जाता था । हिंदू परिवारों में पुरुष स्त्री को जिम्मेदारी या दान का पात्र समझते थे और यवनों के लिए मनोरंजन की वस्तु बन कर रह गई । इसी कारण समाज में बाल विवाह और पर्दा प्रथा , सती प्रथा जैसी कुरीतियों ने जन्म लिया । पुरुष बताने लगे- स्त्री को क्या करना चाहिए ,कैसे वेश -भूषा पहनी चाहिए आदि, उनके जीवन पर उनकी स्वयं का ही अधिकार नहीं रह गया ।

शिवाजी का योगदान -

शिवाजी एक योग्य शासक है ,जिन्होंने राज्य के निर्माण राजनैतिक सफलता के साथ समाज के निर्माण में भी सूक्ष्मता से ध्यान दिया है। अपनी प्रजा की रक्षा को वे अपना सर्व प्रथम धर्म समझते है । प्रजा की रक्षा के लिए उन्होंने हर दो - दो कोस पर आश्रमों का निर्माण कराया , जहाँ वेशधारी ब्राह्मणों और ब्रह्मचारियों के रूप में गुप्तचर और सैनिकों को नियुक्त किया गया। गुप्तचर यवनों की गतिविधियों पर नज़र रखते तथा यवनों से स्त्रियों और बच्चों की सुरक्षा करते । सामाजिक और धार्मिक स्थलों की रक्षा सुनिश्चित करने के सारे प्रयास किए गए। शिवाजी के शासन में स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार या अपमान करने वाले पापियों को कठोर से कठोर दंड ,यहाँ तक कि मृत्युदंड तक देने की अनुमति थी। सौवर्णी के अपहरण करने वाले यवन को गौर सिंह गुप्तचर द्वारा मृत्युदंड दिया गया। यहाँ स्त्रियों की रक्षा के प्रति भारतीय संस्कृति का एक उदाहरण देखने को मिलता है जब श्याम सिंह और गौर सिंह सवर्णी की रक्षा करने के लिए अपने प्राणों की भी परवाह नहीं करते हैं।

शिवराजविजयम् में शिवाजी की घटना के साथ रघुवीर सिंह और सवर्णी की कथा एक साथ प्रवाह होती है । सवर्णी और रघुवीर की प्रेमकथा में दोनों ने अपनी स्वेच्छा से विवाह किया था , इससे स्पष्ट होता है कि मराठा राज्य में स्त्रियों को अपना वर चुनने का अधिकार था ।

अष्टम और नवम निःश्वास में रोशनआरा को शिवाजी के राज्य में बंधी बनाए जाने के पश्चात् तथा शिवाजी के साथ उसके वार्तालाप से यह ज्ञात होता है कि शिवाजी अपने शत्रु की स्त्री के प्रति भी सम्मानपूर्ण व्यवहार करते है, उन्होंने रोशनआरा को किसी किसी राजनैतिक कूटनीति का शिकार न बना कर उसको सम्मानजनक अपने पिता औरंगजेब के पास लौटने का निर्णय लिया । रोशनआरा की शिवाजी से वार्तालाप करते हुए वह स्वतंत्र रूप से अपने विचार व्यक्त करती है, और शिवाजी द्वारा उसके विचारों को सम्मान दिया जाता है। शिवाजी का दृष्टिकोण अत्यंत मर्यादित और आदर्शपूर्ण है , उनके राज्य में स्त्रियों को सम्मान और स्वतंत्रता प्राप्त थी , मुग़ल शासन से बिल्कुल विपरीत स्थिति थी।

शिवाजी के इन नैतिक मूल्यों और आदर्शों के पीछे उनकी माता जीजाबाई के संस्कार और शिक्षाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनकी माता ने अपने जीवन की परिस्थितियों और कठिनाइयों परे रख कर अपने पुत्र को सही शिक्षा दी ,उन्हें धर्म, नीति, न्याय , राजनीति, कूटनीति के साथ स्त्री-सम्मान और प्रजा की रक्षा जैसे आदर्शों की भी शिक्षा दी, जिसने शिवाजी शासन को और भी प्रभावित किया और एक आदर्श और सफल राजा बनाया।

समकालीन प्रासंगिकता-

सौवर्णी के अपहरण जैसे प्रसंग उस समय स्त्रियों की असुरक्षित स्थिति को दर्शाते हैं। दशकों बाद भी आज भी भारतीय समाज इन परिस्थितियों से गुज़र रहा है। वर्तमान में भी हम अपहरण, स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार, उनका अपमान जैसी सामाजिक विफलताओं से जूझ रहे है । आज स्त्रियां दूर -दूर तक विदेशों में जाकर शिक्षा ग्रहण करती है , मानव मंगल ग्रह तक पहुंच चुका है , परंतु अभी भी हमारे देश में स्त्रियों का रात के समय बाहर निकलना सुरक्षित नहीं है । केवल सुरक्षा ही नहीं पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने समाज में इतनी गहरी जड़े बना ली है कि इस युग में भी यह कठिनाई बनी हुआ है ,

समय बदल गया है परंतु लोगों के विचारों में ज्यादा बदलाव नहीं आया , हर घर में स्त्री को पुरुष के बराबर स्थान के लिए संघर्ष करना पड़ता है ,जहाँ पुरषों को विशेषाधिकार प्राप्त है वहाँ स्त्रियों को स्वयं को सिद्ध करना पड़ता हैं।

जीजाबाई द्वारा शिवाजी के जीवन में योगदान इसका प्रतीक है कि एक माता अपने पुत्र की प्रथम शिक्षिका होती है , स्त्री परिवार और समाज में संस्कारों की नींव रखती है। हमारी संस्कृति कहती है ,पिता सौ आचार्यों से भी अधिक गौरवशाली होता है तो माता हज़ार पिताओं से भी अधिक गौरवशाली होती है।

निष्कर्ष -

शिवराजविजयं में सवर्णी, रोशनआरा और जीजाबाई जैसे स्त्री पात्रों के माध्यम से स्त्री के भावनात्मक, नैतिक और सांस्कृतिक पक्षों को दर्शाया किया गया है। कवि द्वारा स्त्रियों की धर्म और आर्थिक स्थिति के अनुसार उनका समाज में स्थान का वर्णित किया गया है।

इसके साथ ही शिवाजी के चरित्र में स्त्रियों के प्रति सम्मान, मर्यादित व्यवहार और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित के किये गए प्रयत्नों पर भी प्रकाश डाला गया है। जिजाबाई के चरित्र के माध्यम से माता का योगदान और उनके संस्कारों का शिवाजी पर प्रभाव देखा गए है। शिवाजी का अपनी माता की सहमति और आशीर्वाद के बिना उनका कोई कार्य सफल नहीं होता था। वे केवल अपनी माता को ही नहीं राज्य कि हर स्त्री को माता के समान देखते थे। जीजाबाई द्वारा शिवाजी को दिए गए संस्कारों का ही परिणाम था कि उनके व्यक्तित्व में स्त्री-सम्मान, न्याय और धर्मनिष्ठा जैसे गुण विकसित हुए, जो आगे चलकर समाज में सकारात्मक परिवर्तन का कारण बने।

अतः शिवराजविजयम् केवल एक राजनैतिक काव्य नहीं, बल्कि स्त्री-सुरक्षा, सम्मान और नैतिक मूल्यों की स्थापना का भी महत्वपूर्ण संदेश देता है। आज चार सौ वर्षों के बाद भी यह उपन्यास समाज को यह शिक्षा देता है कि स्त्रियों को उनके अधिकार देकर ,उनके अधिकारों की सुरक्षा, उनका सम्मान करके और पुरूषों के बराबर स्थान देकर ही एक संतुलित और प्रगतिशील समाज की स्थापना संभव है।

शोध उद्देश्यों की पूर्ति

१. मध्यकाल में स्त्रियों की स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन सफलतापूर्वक किया गया है।

२. शिवराजविजयम् में स्त्री पात्रों का जैसे सवर्णी, रोशनआरा और जिजाबाई के प्रसंगों का गहन अध्ययन किया गया है।

३. वैदिक काल से मुग़ल काल तक स्त्रियों की स्थिति में आए बदलावों को दर्शाया गया है।

४. मुगलों द्वारा हिन्दू कन्याओं और महिलाओं पर किए गए अत्याचारों पर प्रकाश डाला गया है।

५. शिवाजी के चरित्र और उनका स्त्रियों के लिए सम्मान के विषय में चर्चा की गई है साथ ही उनकी माता का उनके जीवन में योगदान को भी दर्शाए गया है।

६. वर्तमान समय में स्त्री सम्मान और सुरक्षा के स्तर को भी प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है।

भविष्यपरक शोध संभावनाएं

१. शिवराजविजयम् के अतिरिक्त अन्य ग्रंथों को आधार बनाकर स्त्री के स्थिति, भूमिक और अधिकारों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

२. लेखक अंबिकादत्त व्यास के समय में स्त्रियों की सुरक्षात्मक और सामाजिक परिस्थितियों पर कार्य किया जा सकता है।

३. शिवराजविजयम् उपन्यास पर सामाजिक, सांस्कृतिक , धार्मिक , राजनैतिक पक्षों पर अध्ययन किया जा सकता है।

४. सवर्णी, रोशनआरा और जिजाबाई जैसे पात्रों का स्वतंत्र रूप से चित्रात्मक , मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया जा सकता है।

४. शिवाजी द्वारा स्त्री सुरक्षा के लिए निर्मित नीतियों की तुलना अन्य शासनकालों की नीतियों से की जा सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची -

१. अथर्ववेद 14/2/115

२. शिवराजविजय, प्रथम निः श्वास, साहित्य भंडार, मेरठ,2009, पृ. सं. 10

३. शिवराजविजय, प्रथम निः श्वास, साहित्य भंडार, मेरठ,2009, पृ. सं. 37

४. शिवराजविजय, प्रथम निः श्वास, साहित्य भंडार, मेरठ,2009, पृ. सं. 42